द्वितीय अध्याय

यशपाल के उपन्यासों का सामान्य परिचय --

सामाजिक जीवन की अपनी सम्पूर्ण विविधताओं एवं बहुपक्षी संघर्ष के साथ चित्रित करनेवाले उपन्यासकारों में यशपाल का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके उपन्यासों में वर्तमान जीवन की विविध समस्याओंका चित्रण हुआ है। यशपाल के उपन्यास और उनका परिचय निम्न प्रकार है --

१) दादा कामरेड।
२) देशद्रोही।
३) दिव्या।
४) पार्टी कामरेड।
५) मनुष्य के रूप।
६) अमिता।
७) झूठा सच।
८) बारह घण्टे।
९) अप्सरा का शाप।
१०) क्यों फंसे।
११) मेरी तेरी उसकी बात।

१) दादा कामरेड --

१९४१ ई.में प्रकाशित इस घटना प्रधान राजनीतिक उपन्यास का सम्बन्ध देश की १९३० के आस-पास की राजनीतिक गतिविधियों और घटनाओं से है। उस समय देश का मजदूर वर्ग अपने विकास की प्रारम्भिक स्थिति में था और उनका संघर्ष बार-बार पराजित हो रहा था। उपन्यास का आरम्भ क्रांतिकारी हरीश के जीवन

को एक अन्ध:कारपूर्ण रात से होता है जब वह भागता है,तब वह एक मध्यमवर्गीय परिवार की महिला यशोदा के यहाँ आश्रय लेता है। प्रात: होते ही वह यशोदा से विदा लेकर अपने परिचिता शैलबाला के यहाँ पहुँच जाता है।

" लाहौर निवासी लाला ध्यानचंद एक अमीर आदमी हैं। नगर के पंजाब कपडा मिल के डायरेक्टर हैं। इस पूँजीपति पिता की इकलौती बेटी बनने का सौभाग्य " शैल " को प्राप्त हुआ था।" १

शैलबाला आधुनिक नारियोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली और महाविद्यालय की शिक्षा विभूषित हैं। वह राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय है,जलसोंमें भाग लेती हैं, और कॅांग्रेस की सदस्य होने की नाते वह भाषण भी देती है और कॅालेज छात्र होने के कारण वह फैशन में भी आगे हैं।

शैल से घनिष्ठता के कारण उस पर लाँछन लगाकर उसे पार्टी से पृथक करने की योजना बनाई जाती हैं। दादा और पार्टी के कुछ सदस्य उसे गोली मारकर समाप्त कर देना चाहते हैं। जब शैल को पता लगता है तो वह हरिश को लेकर मसुरी चली जाती है। वह मिराजकर नाम से वहाँ रहने लगता हैं। यहीं उसका नैनसी से परिचय होता हैं। मृत्यु के मुख में फँसा हरीश शैल को निरावरण देखने की इच्छा प्रकट करता है और शैल उसकी इच्छा पूर्ण करती है। वह गर्भवती हो जाती हैं। शैल की प्रेरणा से कँाग्रेसी प्रति रूढिवादी अमरनाथ की पत्नि पार्टी में सहयोग देने लगती हैं। हरीश मजदूर सभा का मंत्री बन जाता हैं। मजदूरों को उत्तेजीत कर हडताले करवाता हैं। पार्टी उसके कार्यों से प्रभावित होती हैं। विशेषत: दादा वह उसकी सहायता करते हैं। दादा पार्टी के साथ बैंक में डकैत करते हैं और उस रूपये से हरिश की सहायता करते हैं। मजदूरों की माँग स्वीकार हो जाती हैं। हरीश सफल हो जाता है। पर चोरी का पैसा उपयोग में लाने के अभियोग में उस प्राणदण्ड मिलता हैं। गर्भवती शैल की स्थिति दयनिय हो उठती हैं। पिता कुध्द होते हैं पर वह अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं। नाटकीय गतिसे उपन्यास का अन्त होता है ,जब दादा आकर शैल का हाथ थाम लेते है और शैल हरीश की ज्योति को सदैव प्रज्वलित रखने के लिए दादा के साथ प्रस्थान कर जाती हैं।

यह राजनैतिक उपन्यास है जिसकी कथा असल में एक क्रांतिकारी के जीवन की है। उपन्यास के नायक ' हरीश ' को पुलिस से पिण्ड छुडाने यशोदा के घर आधी रात के समय पिस्तौल उठाकर प्रवेश करते हुए दिखा कर लेखकने आरम्भ में ही पाठकों की जिज्ञासा बढाने में सफलता प्राप्त की है। यह घटना जिस अप्रत्यक्षित रूप से पैदा हो गई है,उससे नाटकियता का निर्माण हुआ है। समुचे उपन्यास में लेखकने क्रांतिकारी आन्दोलन की नाकामयाबी तथा उसके परिणाम स्वरूप जनान्दोलन की जबाबदारी कि कथा बताई गई है। दूसरे विश्व युध्द में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा अपनाये रूख को देशहितकारी सिध्द करने का प्रयास स्पष्ट है। उपन्यास में नायक हरीश और शैल की कथा अधिकारिक कथा है तो अमरनाथ - यशोधा,रॉबर्ट-फ्लोरा,अख्तर-जमीला की प्रासंगिक कथाएँ है।

उपन्यास में लेखक ने शैल को नग्न दिखाकर अप्रस्तुत का दोष सिरपर थोप लिया है। लेखक ने उपन्यास में रोचकता लाने के लिए रोमांस को अपनाया है। उपन्यास में डकैती,हडताल आदि घटनाओं के जरिए राजनीतिक एवं क्रांतिकारी वातावरण का निर्माण किया है। जहाँ तक मौलिकता का सवाल है,उपन्यास की अधिकांश घटनाएँ लेखक के जीवन से साम्य रखती है। उपन्यास का अन्त शैल का कॉमरेड बनना सौदेश्य है।

२) देशद्रोही --

मई,१९४३ में लिखित यशपालजी का यह दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक बिखरा हुआ है। १९४२ के कांग्रेसी आंदोलन और कम्युनिस्ट पार्टी की युध्द समर्थक नीति को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से लिखा गया यह उपन्यास नायक को देश-विदेश का भ्रमण कराकर उसे कम्युनिस्ट बना देता है। फल यह हुआ है कि लेखक ने अनेक अप्रत्यक्षित कौतुहलवर्धक घटनाओं की योजना की है -- डॉ. भगवानदास खन्ना का निर्दयी वजीरा के हाथ पडना,वहाँ से उसे अफगानिस्तान लाकर उसका क्रय किया जाता है, उसे धर्म बदलना पडता है, डॉ.को मुस्लिम बनायाँ जाता है। उनका नाम ' अन्सार ' रखते है। आगे उन्हें गजनी निवासी पोस्तीन बेपारी

' अब्दुला ' को बेचा जाता है। अब्दुला के सांघातिक रोग पर इलाज से डॉक्टर के प्रति सहृदयता और लगन पैदा होती इसी के परिणाम स्वरूप अपनी बेटी नर्गिस से डॉक्टर की शादी कर देते हैं। नर्गिस के साथ कई दिन बिताने पर बेचैनी के कारण वह व्यापारी के पुत्र नासिर के साथ रूस भाग जाता है।

खन्ना की मृत्यु का झूठा समाचार सुनकर उसकी पत्नि राज कॉग्रेस नेता बद्रीबाबू की सहानुभूति पा राजनीतिक कार्यों में भाग लेने लगती है। उनका विवाह भी हो जाता है। कुछ दिन बाद खन्ना मास्को से साम्यवाद की शिक्षा प्राप्त कर अपने देश लौट आता है। उसे अपनी पत्नी एवं बद्री बाबू के संबंधों का पता चलता है, पर पत्नी के सुख में व्याघात न पहुँचाने के उद्देश्य से वह कानपुर में राजनैतिक कार्य करता रहता है। वहाँ उसे राज की बहन चंदा की तो आत्मीयता प्राप्त होती है। चन्दा का पति राजाराम खन्ना का विरोध करता है, उसे देशद्रोही समझता है, उसके आचरण को दूषित बताता है। कम्युनिस्टों, समाजवादियों एव मिल मजदूरों के दंगों में खन्ना आहत होकर मूर्च्छित हो जाता है। जब चन्दा को खन्ना के घायल होने का पता चलता है, वह उसे राज के पास ले जाती है, पर राज खन्ना को शरण नहीं देती, वह बद्री बाबू से पायी सन्तान और अपनी नई गृहस्थी को समाप्त नहीं करना चाहती। चंदा खन्ना को लेकर लौटती है, राजाराम अपनी पत्नि की भर्त्सना करता है। खन्ना को मार्ग में ही पत्थरों पर छोड़कर उसे अपने पति के साथ जाना पड़ता है। खन्ना मूर्च्छितावस्था में बड़बड़ाता है ' चाँद उनसे कहना मैं देशद्रोही नहीं।' पाठक की सहानुभूति खन्ना के प्रति जगाने में तो लेखक पूर्ण रूप से सफल होता है, पर उपन्यास का अन्त अस्वाभाविक एवं यन्त्र चलीत-सा प्रतित होता है।

प्रस्तुत उपन्यास का प्रधान उद्देश्य सन १९४२ की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति, ' भारत छोडो आन्दोलन ', समाजवादी तथा साम्यवादी स्थिति और उस समय की कम्युनिस्ट नीति का चित्रण करना या, लेखक ने सामाजिक समस्याओं पर आधारित अनेक नाटकीय, अप्रत्याक्षित एवं कौतुहल विषयक प्रसंगों की योजना कर कथानक को रोचक बनाने का प्रयास किया है। रोमांस पर्याप्त मात्रा में होने पर भी इसमें राजनीति ही प्रधान है।

३) दिव्या --

चित्रमय ऐतिहासिक काल के प्रति गहरे मोह से लिखा गया यह उपन्यास लेखक का तीसरा प्रयास है, जिसमें लेखक ने ऐतिहासिक वातावरण के आधारपर यथार्थ का रंग देने की कोशिश की है। ' दिव्या ' इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पनामात्र है। लेखक ने इस स्पष्टीकरण को देखते हुए इसे ऐतिहासिक उपन्यास की संज्ञा देकर उसका मूल्यांकन करना उचित होगा। वह सिर्फ ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर लिखा गया ऐतिहासिक विषय पर लिखा लेखक का यह पहला उपन्यास है।

' दिव्या ' में बौध्दकालीन समाज के चित्र खींचते हुए यशपाल ने सामन्ती समाज व्यवस्था में नारी की परतंत्र स्थिति को कथा का आधार बनाया है। सामन्ती व्यवस्था में नारी का योग्यता रूप प्रधान था। अत: दिव्या के कथानक का गठन यशपाल ने नारी के इसी रूप को लेकर किया है।

मद्र गणराज्य में सागल नामक एक गण है, जिसकी गण-परिषद द्वारा परिपाटी के रूप में वसंत ऋतु के स्वागत में ' मधुपर्व-मनाया जाता है। महापण्डित देवशर्मा की प्रपौत्री, द्विजकुलोत्पन्न, राजनर्तकी मल्लिका की शिष्या, ' दिव्या ' को उस उत्सव में नृत्यकला के सराहनीय प्रदर्शन पर ' सरस्वती पुत्री ' की उपाधि से विभूषित किया जाता है। इसी समारोह में आयोजित शस्त्रप्रतियोगिता में दास पुत्र पृथुसेन को ' सर्वोत्तम खड्गधारी ' घोषित कर दिव्या द्वारा पुष्पमुकुट चढाया जाता है। इस सम्मान से खार खानेवाले अभिजात वर्ग के युवक दिव्या की शिविका को कन्धा लगाने के प्रश्न पर यह कहकर आपत्ति उठाते है कि, दास-पुत्र को अभिजात वर्ग के युवकों के साथ शिविका में कन्धा देने का अधिकार नहीं। अपने अधिकार का निश्चय खड्ग से करनेवाले पृथुसेन के प्रति दिव्या आकर्षित होती है। इसी समय कैंद्रस सागल पर चढाई करता है। युध्द में जाने के पहले पृथुसेन दिव्या से मिलकर विवाह का वचन देता है। दिव्या पृथुसेन के सामने आत्मसमर्पण कर देती और परिणामस्वरूप गर्भवती बनती है।

युध्द से लौटने पर पृथुसेन को अपने पिता की आज्ञा का पालन करना पडता

है और वह विवश हो ,सीरो से शादी करता है। अपनी लज्जा-रक्षा के लिए दिव्या को सागल छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है। शामाल छोड़ने से दिव्या को अनेक यंत्रणाओं का सामना करना पड़ता है। दास व्यापारी प्रतुल,भूधर, पुरोहित ,चक्रधर जैसे अनेक के हाथ लगती दिव्या भोग्य बन जाती है। अपनी इस अवस्था से उत्पीड़ित हो आत्मघात का प्रयास करती है। पर रत्नप्रभा नामक नर्तकी के कारण बाल-बाल बच जाती है। रत्नप्रभा के यहाँ अंशुमाला बन फिर नर्तकी के रूप में लोगों को रिझाने लगती है।

दुर्भाग्यवश फिर सागल ही उसके नसीब में आता है। राजनर्तकी मल्लिका की उत्तराधिकारी के रूप में आनेवाली दिव्या को सागल का अभिजात समाज द्विजकुलोत्पन्न होने के कारण वेश्या के रूप में स्वीकृत नहीं करते। निराश दिव्या पाठशाला में सहारा लेती है। यहीं भिक्षु-पृथुसेन,दार्शनिक मारिश तथा आचार्य रूद्रधीर दिव्या के समक्ष प्रणय-निवेदन करते हैं। रूद्रधीर महारानी बनाने का लालच दिखाता है, तो पृथुसेन बौध्द संघ में आने की प्रार्थना करता है। मारिश द्वारा अपने सुख-दु:ख की सहचारिणी बनाने के स्ताव को प्रसन्नति की परंपरा के रूप में अमरता का साधन मान वह स्वीकृत करती है।

इतिहास के कथानक का चुनाव इतिहास जैसे क्षेत्र से कर लेखक ने नवीनता निर्माण किया है। ` दिव्या ` की कथा बौध्द-काल के अभिजात वर्गद्वारा दासों के शोषण की कथा है जिसे लेखकने मार्मिकता से चित्रण किया है। प्रासंगिक कथाओं की उद्भावनाओं के अभाव के कारण कथावस्तु शिथिलता,बोझिलता, रूक्षता जैसे दोषोंसे बच पायी है। लेखक ने कथा में अभिजात वर्ग के सुखासीन क्रियाकलापों की पार्श्वभूमि में दासों का रूदन चित्रित कर वर्ग-संघर्ष को सजीव बनाया है। उपन्यास की कथा घटना प्रधान है जिसमें पृथुसेन का` सर्वश्रेष्ठ खड्गधारी` होना,दिव्या का स्वेच्छा से समर्पण,दिव्या द्वारा ` रत्नप्रभा को आश्रय देना` तथा अन्त में मारिश का स्वीकार आदि घटनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। कथावस्तु ऐतिहासिक होते हुए भी उसमें निहित ज्वलंत मानवी समस्याओं के कारण आधुनिक-

सी लगती है। उपन्यास सुखांत है। अन्त में नाटकीयता और जिज्ञासा की चरमसीमा देखते ही बनती है। अश्कजी ने लिखा है

" उसका अन्त सिनेमा के पर्दे पर बड़ा प्रभावोत्पादक हो सकता है।"[२]

उपन्यास का घटना, संगठन कथा को प्रथम स्तर पर अधिष्ठित करता है।

४) पार्टी कामरेड --

इस लघु राजनीतिक उपन्यास का प्रणयन १९४७ में हुआ। उनका कथानक भी राजनैतिक क्षेत्र से सम्बध्द है। उसमें कम्युनिष्ठ दल की राजनीति का चित्रण - विवेचन है। यशपाल ने स्वयं इस उपन्यास की कहानी को "पाठक के चारों ओर मौजुद परिस्थितियों की कहानी" कहा है। कम्युनिष्ठ पार्टी की कार्य-प्रणाली, चुनाव जितने के लिए पार्टियों के हथकण्डे तथा हड़ताल और नाविक-विद्रोह के समय साम्राज्य विरोधी प्रदर्शन आदि घटनाएँ ही कथानक का मूल आधार हैं। कथा का नाटकीय आरम्भ बम्बई के एक रेस्तराँ में होता है। वहाँ के एक बदचलन सेठ भाँवरियाँ गीता के रूप यौवन पर आकृष्ठ होता है और गीता अपने व्यवहार से भाँवरियाँ की सहानुभूति कम्युनिस्टों के प्रति जागृत करने में सफल होती है। दोनों में घनिष्ठता बढती जाती है। एक दिन भाँवरिया गीता को अपनी मित्र-मंडली में मार्टुंगा-क्लब में ले जाता है जहाँ उसके साथ वेश्या जैसा व्यवहार किया जाता है। उल्टे पैर लौट जाती है और भाँवरिया की भर्त्सना करती है।

नौ सेना-विद्रोह के अवसरपर गीता घूम-घूमकर भाषण देती है। भाँवरिया पर उसके भाषण का गहरा प्रभाव पड़ता है और वह आंदोलन में भाग लेता हुआ घायल हो जाता है। अस्पताल में भाँवरिया अंतिम समय गीता से मिलाने की इच्छा प्रकट करता है, पर इच्छा पूरी होने के से पूर्व ही प्राण त्याग देता है। यही संक्षिप्त कथानक है।

५) मनुष्य के रूप --

फरवरी १९४९ में लिखित यशपाल का यह पाँचवा उपन्यास है। आदमी क्या है और उसके कितने रूप हो सकते हैं, मनुष्य जीवन की इस पहेली का हल मनुष्य

के रूप हैं। पहाड़ी जनजीवन, तत्कालीन समाज में विधवा नारी की स्थिति, पुलिस के पाशविक अत्याचार, आजाद हिंद सेना का संगठन, कॉंग्रेस और कम्युनिष्ठ पार्टी का राजनीतिक संघर्ष, भारत छोड़ो आन्दोलन, फिल्म जगत की बुराईयाँ आदि का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास का वर्ण्य विषय है।

सोमा इस उपन्यास की प्रमुख नायिका है। सोमा पहाड़ी प्रदेश में रहने-वाली बेवा, राजपूतानी है। मोटर-दुर्घटना में धनसिंह ड्राइवर से परिचित होती है। अपनी विवशता में ड्राइवर की हमदर्दी उसे उसकी ओर आकर्षित करती है। लम्बी प्रतिक्षा के बाद धनसिंह के साथ पारिवारिक अत्याचारों से ऊबकर भाग जाती है। दुर्भाग्यवश दोनों पुलिस के द्वारा पकड़ जाते हैं। पुलिस धनसिंह को हवालात में बंद करते हैं तथा सोमा को अपनी वासना पूर्ति का साधन बनाती है। यहीं से सोमा का यंत्रणा भरा जीवन आरम्भ होता है। कॉमरेड भूषण की सहायता से वह धर्मशाला निवासी लालाज्वाला सहाय के घर आश्रय पाती है। मनोरमा, बैरिस्टर जगदीश तथा सभी घरवालों को अपना लेती है। शामशूत और जग्गी की हत्या कर धनसिंह नदारद हो जाता है। सोमा अपने दिन बड़ी रूखाई से काटती रहती है। आगे बैरिस्टर जगदीश के परिवार के साथ लाहौर जाती है। दिनोंदिन बढ़ती निकटता के कारण वह जगदीश की वासना का शिकार बनती है। बैरिस्टर के साथ बढ़ते सम्बन्ध उसे घर की पूरी सत्ता दे बैठता है। घर के नौकर उसे साहब की रखैल मानने लगते हैं। बैरिस्टर जगदीश को तिसरी सन्तान के नामकरण हेतु सभी घरवाले इकट्ठे आते हैं। तब घर की नौकरानी सोमा का प्रभाव उन्हें निरन्तर अखरता रहता है। साड़ी के बहाने वे सोमा को घर से निकाल देते हैं। निराश्रित सोमा बरकत का आश्रय पाकर बम्बई आती है। बरकत फिल्म का सितारा बनने का दिवास्वप्न देखा करता था। सोमा को भी उसी व्यवसाय में लगाने की सोचता है। फिल्मी व्यवसाय के अनेक बुरे अनुभव लेने के पश्चात बनवारी की सहायता से सोमा 'पहाड़न' के रूप में एक सफल अभिनेत्री बन जाती है।

लाहौर में हत्या करने के पश्चात पुलिस से बचने के लिए वह लाहौर से दिल्ली आता है। दिल्ली में भी वातावरण आतंकपूर्ण था। अनेक नेताओंका

गिरफ्तार किया गया था । इसी समय सभी नेताओं के जेल से छोडने के लिए निदर्शन चल रही थी । धनसिंह भी शामील होते है और उन्हें गिरफ्तार किया जाता हैं ।

सोमा को घर से निकालेने के बाद मामी और मनोरमा में झगडा होता रहता हैं । घर का वातावरण तंग आता है, इस वातावरण को बाज आकर मनोरमा सुतलीवाला से शादी करने के लिए तैयार होती हैं । सुतलीवाला एक चित्रपट व्यवसायी है । मनोरमा और सुतलीवाला के बिच में तणाव पैदा होता है । मनोरमा अपने पूराने साथी कामरेड के साथ पार्टी में काम करने लगती है । यही उसका दिल बहलाने का एक मात्र उपाय था । सुतलीवाला अपनी पत्नि को व्यवसाय वृध्दि का साधन मानता था लेकिन उसमें वह असफल रहता है । सुतलीवाला मनोरमा के साथ सम्बध्द स्थापित करता है और मनोरमा को तलाक देता है ।

रिहाई होनेपर धनसिंह जेल से बाहर आता है तब उसे नेताजी का सन्देश सुनने को मिलता है । धनसिंह प्रभावित होकर आजाद हिंद सेना में दाखिल होता हैं । कानपुर में जलता घोंसला सिनेमा चल रहा था । उस फिल्म कि नायिका पहाडन याने सोमा थी । वह बेचैन होता है और बंबई आता हैं । कॉमरेड भूषण के साथ सोमा के मिलने जाता है । सोमा धनसिंह पहचानने लिए तैयार नहीं होती । अमीन तथा बरकत के पहाडन से मिलाने के लिए मना करने पर झगडा होता है । उसमें भूषण घायल होता है,और अस्पताल में दम छोडता है । भूषण की मृत्यु से मनोरमा को हादसा बैठ जाता है । धनसिंह को पुलिस गिरफ्तार करते है । संक्षेप में उपन्यास का यहीं कथानक है ।

६) अमिता -- १९५६

मगध सम्राट अशोक राज्य विस्तार को लिप्सा से कलिंग पर आक्रमण करता हैं । उस आक्रमण का मुकाबला करने के लिए कलिंगराज करवेल के अपनी विशाल सेना के साथ निकलने के एकही दिन पहले महारानी नंदा कन्यारत्न को जन्म देती है । इस विशेष समयपर पुत्री जन्म को राज्य ज्योतिषी शुभ मानते है तथा नवजात शिशु को अमित वैभव और पराक्रम की स्वामिनी मानते है । अत:

अत: ` अमिता ` के रूप में नामभिधान करते हैं। राज्य ज्योतिषी के पूर्व-घोषित भविष्य के अनुसार कलिंगराज करवेल पिडित जरूर होता है पर युध्द में सख्त घायल होने के कारण परलोक सिधारता है। महाराज मृत्यु के बाद उनकी इच्छा के अनुसार ` अमिता ` को राज्य की उत्तराधिकारिणी घोषित किया गया।

पति वियोग को भूलने के लिए रानी राजपाट त्याग भजन-पूजा में रत हो गई। अपना समय शान्ति और निर्वाण प्राप्ति की चिन्ता में बिताने लगती है। अपनी बेटी ` अमिता ` को वह हमेशा तु सदा बहुजन के हित के लिए, बहुजन के सुख के लिए, बहुजन के परित्राण के लिए प्रयत्न कर यह संदेश देती है।

इधर महामात्य सुकंठ महासेनापति भद्रकीर्ति तथा धर्मस्थ आर्य प्रतिक राज्य का कारोबार चलाना शुरु करते हैं। सम्राट अशोक पराजित होकर मगध लौटकर कलिंग पर दूबारा आक्रमण करना चाहता है। कलिंग की राज्य परिषद को अशोक के संभाव्य आक्रमण की सूचना मिलने पर महामात्य, प्रजा में आत्मविश्वास और साहस, विश्वास निर्माण करना चाहते हैं। इस प्रयोजन से प्राचिन परंपरा से युध्द में जय हासिल करने के लिए ` संग्राम, बलियज्ञ ` किया जाता था उसकी भी घोषणा कि जाती हैं। यह यज्ञ रानी नंदा को पसंद नहीं है, इसका निषेध करती हैं। मगध सैनिक कलिंग के नागरिकोंके घरों को जला देते हैं। यह देखकर अमिता के मन में अशोक के प्रति क्रोध पैदा होता है। अमिता अशोक को की भाँति बाँधना चाहती है। अशोक को न पहचानने के कारण वह अशोक से अशोक को बांधने की सहायता माँगती हैं। वह अशोक ही है यह पता चलनेपर वह उसे पूछती हैं --

` तुम प्रजा से क्यों छिनते हो ? तुम प्रजा को क्यों ठूकराते हो ? तुम प्रजा को क्यों मारते हो ? तुम्हे क्या चाहिए ? ` [3]

अशोक के कलिंग का राजसिंहासन माँगने पर निडरतासे अशोक को पूछती है --

` क्या तुम्हारे पास राजसिंहासन नहीं है ? अच्छा ले जाओ ? हम दूसरा ले लेंगे। ` [4]

कठोर हृदयवाले अशोक का हृदय पिघल जाता है। जो हृदय लाखों सैनिकोंके रक्त से भी न भीगा था, द्रवित हो उठा था। वह उस छोटीसी बेटी के उग्दारों से द्रवित होता है। अशोक खड्ग भूमिपर फेंकर कहता है --

" कलिंग की महारानी मगध का विजयी सम्राट हार गया तुमने विजय पायी।" ५

अशोक सम्राट होकर भी अमिता के आज्ञा के अनुसार प्रतिज्ञा करता है कि वह किसी से छिनना नहीं, किसीको डरायेगा नही, किसी को मारेगा नहीं। वह अब हिंसा और युध्द से विजय की कामना नहीं करेगा। वह कलिंग की विजयी महारानी की भाँति निश्चल प्रेम से संसार के हृदयों को विजय करेगा।

७) झूठा सच --

लाहौर नगर की एक सघन गल्ली है। 'भोजा पांधे की गल्ली' नामसे परिचित है वह। गल्ली क्या 'मिनी पंजाब' कहिए। भाषा, पात्र, रचना रस्मेरिवाज, रहन-सहन एकदम पंजाबी प्रदेश की प्रतिकृति है। दो भाई मास्टर रामलुभाया और बाबू रामज्वाया इस गल्ली के निवासी है। घर के पूराने संस्कार हैं। उसकी रक्षा करना अपना परम कर्तव्य मानते हैं। बुढियाँ माँ मृत्युपर पारंपारिक स्थापा, मरना, बाँटना बडीही हमदर्दी के साथ करते हैं। कोई कसर नहीं करते। बाबू रामज्वाया रेल्वे पार्सल दफ्तर में नौकर थे। छब्बीस वर्ष की नौकरी हो चुकी थी। 'पीपल बेहडे' के मुहल्ले की 'उँची गल्ली' में दो गिरे हुए मकान खरीदकर नया तीन मंजिला मकान बनवाया है। जीवन की सार्थकता का मानो प्रतिक था। बडे लडके की शादी हो चुकी है। लडकी शीलो की मंगनी हो चुकी है। आर्थिक सम्पन्नता के कारण बुढिया माँ इन्हीं के घर में रहती थी। भाई मास्टर रामलुभाया डी.ए.वी.स्कूल के अध्यापक थे। विचारों से सुधारवादी थे। सौंग रहन-सहन पर विश्वास न रखते थे। तारा इन्हीं की बेटी है। तारा कॉलेज में पढती है। लडका जयदेव एम.ए.में पढता है।

जयदेव पुरी विचारों से क्रांतिकारी है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय है। जेल में भी गया है। पौने दो बरस तक जेल काटने के बाद पुरी बाहर

आता है। जीवन के आदर्शवादी रंग-बिरंगे स्वप्न लेकर। उन्हें बाहर जगत की आर्थिक स्थिति देखकर दिल को ठेस पहुँचती हैं। उसे मालूम होता है कि घरवालोंने पढी-लिखी छोटी बहन तारा की सगाई की हैं। तारा खुद नहीं चाहती कि उसकी शादी हो। वह पढना चाहती हैं। जयदेव पुरी उसे पढाने का निश्चय करता हैं। घरवाले सहायता नहीं करते। डॉ.प्राणनाथ तारा की सहायता के लिए भतीजों की टयुशन लगवा देते हैं। तारा पढती रहती हैं। कॉलेज के मुक्त वातावरण में घर की दुरवस्था मूल स्टुडेंट फेडरेशन की गतिविधियों में सक्रिय रहती हैं। इधर पिताजी बढती उम्र और बढते अस्वास्थ के कारण टयुशन वगैरह नहीं कर पाते। दौड़-धूप उनके बस की बात अब नहीं रही। इसलिए लाला बधावामल नारंग की बेटी उर्मिला को पढाने का काम जयदेव को करना पडता है।

जयदेव के पता चलता है कि आज टयुशन से गृहस्थी नहीं चलेगी। वह अच्छी नौकरी की तलाशी में बेचैन रहता हैं। इनकी कहानीयाँ ` पैरोकर तथा निशाने ` में प्रकाशित होती हैं। लाला गिरधारीलाल जो ` नया हिन्द ` प्रकाशन चलाते हैं की बेटी कनक जो हिन्दी में रुची रखती हैं के साहित्यिक अध्ययन में सहायता करने की जिम्मेदारी पुरी अपने पर लेता हैं। परिवार के साथ घनिष्ठता भी बढती हैं। अपने पडोसी डॉ.प्रभुदयाल की सहायता से डॉ.राधेबिहारी से शिफारिशी पत्र प्राप्त करता है। ` पैरोकर ` में पत्रकार होने का उनका स्वप्न पुरा हो गया। उसे बहुत आनंद होता हैं।

यही वह समय है जब अंग्रेज भारत में किसी भी हालत में भारतीय संगठन को किसी न किसी बहाने तितर-बितर करने में क्रियाशील थे। ` विभाजित करो और राज्य चलाओ ` की अपनी कुख्यात नीति को अपनाकर राष्ट्रीय आन्दोलन में रोडा अटकाने हेतु अंग्रेजों ने तत्कालीन भारतीय नेताओं के सामने एक योजना रखी। इस योजना के अन्तर्गत हिन्दु और मुसलमानों की तादाद जहाँ समान थी, ऐसी जगह जनमत संग्रह के आधार पर स्वयं निर्णय का अधिकार जनता को दिया गया था। स्पष्ट रूप से पंजाब-विभाजन का यह षडयंत्र था। इस योजना की देश में

जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई । मत-मतान्तरों के कारण सांप्रदायिक तनाव बढ गया था । कहीं-कहीं छिटपुट दंगों के समाचार मिल रहे थे,जो भविष्य के सामुहिक एवं योजनाबध्द अत्याचारों की सूचना दे रहे थे ।

घरवाले तारा की शादी करना चाहते थे । तारा का बचपन का साथी रतन है । वह उसेही चाहती है । प्राणनाथ के हमदर्दीपूर्ण बर्ताव से वह अनुग्रहीत हैं । जीवनसाथी चुनने का स्वप्न रखने पर भी किसी अजनबी से शादी करना उसके प्रगतिशील व्यक्तित्व को नहीं जंचता है । जब घरवाले नहीं मानते तब साथी असद के साथ घर से भाग जाने की सोचती हैं । हिन्दु-मुसलमानों के लूटपाट,अत्याचारों को देखते हुए असद ऐसा न करने की सलाह देता हैं । असद को भीरू मान वह विवाह से बचने के लिए आत्मघात करने की कोशिश करती हैं । जयदेव तारा की इन हरकतों से त्रस्त होता है । सोमराज से विवाह के प्रस्ताव को अनुमति देता हैं । नगर में जातीय दंगे हो रहे थे । फिर भी शादी तय की जाती है और मुहूर्त पर भी । किसी का समर्थन न होने पर तारा के शादी करनी ही पडती हैं । दुर्भाग्य कि बेचारी सुहाग रात के ही समय पतिद्वारा पीटी जाती है,तारा जान बचाने के लिए एक मुसलमान से शरण लेती है । सुरक्षा के लिए रखी जाती है । ससुरालवाले इस घटना से बचने के लिए अफवाह फैलाते है कि तारा आगजनी में वह राख हो गयी ।

इधर ` पैरोकर ` की पत्रकारिता का लाभ पुरी को ज्यादा दिन नहीं मिला क्योंकि ` पैरोकर` पत्र कांग्रेस का पत्र था पुरी ने कॉंग्रेस नेताओंपर अपने ` दैालूमामा ` शीर्षक लेख में टिका कि थी । पुरी को ` पैरोकर` छोडना पडा। बाद में अनेक पत्रों में लिखता रहा लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ । पुरी लाहौर छोडकर नैनीताल चला जाता है ।

अंग्रेज अपनी नीति की सफलता देखकर पाकिस्तान भारत विभाजन का विषय छेडने लगते हैं । भारत और पाकिस्तान में लूटपाट,आगजनी,पाशविक अत्याचारोंका राज्य फैलता हैं । पाकिस्तान में हिंदुओं पर अत्याचार किये जाते थे और उन्हें पाकिस्तान से निकाल दिया जाता था । भारतीय मुसलमानोंपर

अत्याचार किये जाते थे। परिवारकी चिन्ता से पुरी नैनिताल से लाहौर आता है लेकिन कुछ फायदा नहीं होता। तारा एक मुसलमान के हाथ लगने से वह उसे मुसलमान बनाना चाहता है लेकिन तारा तैयार नहीं होती इसी कारण उसे ऐसे गिरोह को सौंप दिया जाता है जो लडकियों को बेचता है। गिरोह में तारा की दिशा और बुरी होती है। तारा का नशिब अच्छा था, स्वयंसेवकोंके एक दलने उसे इस अत्याचारों से बचाकर उसे भारतीय सीमापर लाया जाता है, जहाँ विस्थापितोंका शिबिर है।

यही है वतन और देश की कथा का सार। ` देश का भविष्य ` अंश पुरी के जालंधर आने से प्रारंभ होता है। लाहौर में परिवार की तलाश में हारा हुआ पुरी भटकता हुआ जालंधर आता है। परिवालों की चिंता उसे सताती है। पुरी दिनभर परिवारवालों की तलाश करता और रात में खाना विस्थापितों के शिबिर में खाता। ढाबेवाले ने फटकारने के कारण उनके यहाँ काम करने के लिए रखता है। यहाँ उनकी मुलाकात जेला के मित्र और जालंधर के जाने-माने नेता सुद से होती है। पुरी जैसे क्रांतिकारी युवक की हालत से उनका दिल पिघल जाता है। पुरी की आदते से पूरी तरहसे परिचित थे। वे इस्ताफ नामक एक मुसलमान का ` कमालप्रेस ` पुरी के हवाले करते हैं। सुदजी के आशिर्वाद से और उनके कष्ट या मेहनत से वे नाजिर ` नामक पत्र का प्रकाशन करते हैं। संपादक के रूप में चंद दिनों में ही सब उसे जानने लगते हैं।

अपना प्रेस व्यवसाय संभालने के थोडे दिन ही बाद बाजार में अचानक उसकी भेंट बधावामल नारंग की परिवार से होती है। असहाय परिवार को पुरी अपने प्रेस में शरण देता है। पुरी और उर्मिला के पुराने संबंध को उजाला मिलता है। पुरी अपने परिवार से हाथ धो बैठा है। कनक को मन से चाहता था। लेकिन वह मिलती नहीं, मिलाने के लिए बहुत कोशिश भी करता है। जिवन में ज्योती के समान उर्मिला उसके सामने आती है। उर्मिला और पुरी का संबंध बढताही गया। यह हरकतें उर्मिला के माँ को अच्छी नहींलगती, उर्मिला की माँ उन्हें यहाँ छोड दिल्ली चली जाती है। पुरी उसे समझा-बुझाकर आश्रय का आश्वासन देता है।

विभाजन के समय भारत के आर्थिक व्यवहार बुरी तरहसे हो रहे थे। इसका असर सामान्य जन पर भी देखने को मिलता है, इस वातावरण को बाज आकर कनक दिल्ली में पुरी को ढूँढने के लिए और नौकरी के लिए आती है। कनक 'सरदार' में पत्रकार बनती है। यहीं वह गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होती है। अपने लेखों में वह गांधीवादी विचार-समर्थन करने में असफल होती है। 'सरदार' पत्र के सम्पादक 'असीर' के अभद्र व्यवहार से वह अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगती है। लखनऊ में जाकर अपना नसिब बनाना चाहती है। लखनऊ के वातावरण के प्रति भी उसे आशंका आति है। यहाँ उसे प्रसाद जैसे रूप लोभी मानव का भी सामना करना पडता है, आखिर हिम्मत नहीं हारती ऐसी बुरी स्थिति में भी उसे गिल के बर्तावसे सांत्वना मिलती है। गिल को वह अपने आपको समर्पित भी कर देती है। कई दिनों बाद नय्यर के पत्र से पुरीका पता मिलता है और जीवन में हरियाली आती है। पुरी को मिलने जाती पर वहाँ उर्मिला के साथ देख निराश होती है। पुरी उसे समझाता है। पुरी उर्मिला के साथ रहने से अपने आपको धोके में महसुस करता था। उर्मिला के लिए सबकुछ खो देता उसके लिए असम्भव था। कनक और अपने मार्ग में आनेवाला रोडा हटाने के लिए पुरी उर्मिला को नर्सिंग के लिए भेजता है। लेकिन पुरी का पापी मन उर्मिला के प्रति अन्याय करता है। पुरी का मन अंदर-ही-अंदर जलता रहता है, क्योंकि उर्मिला गर्भवती हो गयी थी। कुमारी उर्मिला माता असहाय बनी थी। उर्मिला चली जाने से कनक-पुरी के मिलन की बाधा हट जाती है। वे दोनों शादी करते हैं। गिल को बुलाकर पत्रिका के प्रकाशन का शानदार समारोह भी करते हैं।

तारा को दिल्ली लाया जाता है। परिवार की दुर्दशा देखकर वह स्वावलंबी बननेकी सोचती है। मिसेज अगरवाल के घर गवर्नेस बनी रहती है। असुरक्षा एवं हीन बर्ताव के कारण उस नौकरी से भी हाथ धोना पडता है। नसीब से उसे सरकारी नौकरी मिलती है। अपनी क्षमता एवं परिश्रम से नौकरी में पदोन्नती पाती है। वह पर्याप्त सुरक्षित एवं प्रतिष्ठित बनती है। सरकारी कामकाज के व्यापक सम्पर्क के कारण उसकी मुलाकात डॉ. प्राणनाथ से होता है।

यह मुलाकात शादी के प्रस्ताव तक बढती है।

पुरी ने राजकीय क्षेत्र में पदार्पण किया था। जाना-माना पत्रकार, सम्पादक, विधानसभा सदस्य, अनेक समितियाँ - संस्थाओं से संबंधित पुरी एक ओर अपने व्यावसायिक और राजकीय जीवन की उच्च शिखर तक पहुँचता है। लेकिन घरेलू वातावरण बिघडा हुआ है। उर्मिला के प्रति किए गए अन्याय और अपराध के कारण वह कनक को सुखी नहीं बना पाता। कनक के साथ वह अपने आपको सामायोजित करना चाहता लेकिन वह उसमें समाधानी नहीं बन पाता। परिणाम-स्वरूप कनक उसे छोड कर चली जाती है। कनक का इस प्रकार चला जाना उसकी प्रतिष्ठा पर गहरी चोट कर देता है। फिर भी पुरी के सामने यह सहने के सिवा दूसरा मार्ग नहीं था।

देश में लोकसभा और विधानसभा के नये चुनाव होने के पहले १९५६ में दूसरी योजना की आयोजना में डॉ. प्राणनाथ और सुदजी में तू-तू, मैं-मैं होती है। सूद पुरी की ओर से बदला लेने की सोचता है। उनकी दुश्मनी की हद अंतिम सिढी तक पहुँचती है। वे डॉ. प्राणनाथ के तारा के साथ हुए विवाह को अदालत में चुनौती देते हैं। दुर्भाग्यवश अदालत प्राणनाथ के विवाह को वैध मानती है। इसी समय आम चुनावों के परिणाम भी जाहिर होते है। जिसमें सुदजी १७,००० वोटों से परास्त हो जाते हैं। सुदजी की हार जनता की सर्तकता को सिध्द करती हैं। यह हार यह साबित करती है कि जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नहीं रह सकती एक-ना-एक दिन उसका स्फोट होताही है। देश का भविष्य नेताओं और मंत्रिओं की मुठ्ठी में नहीं है देश की जनता के ही हाथ में है।

उपन्यास की कथा राजनैतिक एवं सामाजिक है। प्रस्तुत कथावस्तु में लेखक ने एक ओर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, देश-विभाजन के पीछे, राजनीतिक दलों की हरकतें, देश-विभाजन की घटना, परिणाम स्वरूप टूटे-फुटे परिवार, लूटपाट, आगजनी, बलत्कार, चित्रित कर कथा में प्राण डाला गया है। दूसरी ओर समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता, रूढिप्रियता, आर्थिक मजबूरी, आदि का चित्रण कर तत्कालीन समाज की परिस्थिती का स्पष्टिकरण किया है।

<u>बारह घण्टे --</u>

जीवन में प्रेम का स्वरूप बनाने के उद्देश्य से ही इसकी रचना की गयी हैं। यह उपन्यास सहेतुक कृति हैं जिसके जरिए उन्होंने विवाह एवं प्रेम की परम्परागत नैतिकता की मान्यताओंपर जबरदस्त प्रहार किया हैं,और अपने मार्क्सवादी विचारों को प्रस्तुत किया हैं।

बारह घण्टे उपन्यास की कथावस्तु विधवा और विधुर के परस्पर सहज आर्कषाण की कथा हैं। विनी का पति रोमी नैनीताल की झील में तैरता हुआ मर गया। फैंटम की पत्नी टी.बी.की शिकार बन कर मर गयी हैं। दोनों का एकही धर्म है,ईसाई। अपने स्वर्गीय प्रेम-पात्रों को श्रध्दांजली अर्पित करने के लिए दोनों नित्य सेमेण्ट्री में आते हैं। दोनों के मन में अपने मृत जीवन साथी के प्रति बहुत प्यार हैं। एक दिन रिसा आता है,दोनों मी एक ही समय सेमेण्ट्री में आते है उसी समय जोरों से वर्षा शुरु होती है इसी कारण दोनों को रूकना पडता हैं। इसी समय दोनोंका परिचय होता हैं। विनी और फैंटम अपनी अपनी व्यथा सुनाकर धन्य होते है और उनके मनमें आकर्षाण पैदा होता हैं। दु:ख-दर्द की समानता उन्हे एक धागे में पिरोये देती हैं। दोनों एक-दूसरे में अपने पूर्वाश्रयी पति-पत्नी के स्वभाव, प्रेम, सहृदयता की प्रति छावि का आभास पाते रहते हैं। यह आकर्षाण यहाँ तक पहुँच जाता है कि अपने रिस्तेदारों के घर जाने के लिए निरंतर उत्सुक विनी फैंटम के जाने का तथा उसी के घर रात काटने का निश्चय कर लेती हैं। फैंटम के घर की आस उन्हें इतना व्याकुल बनाती है कि यह फैंटम को इस हालत में अकेला छोडने के लिए राजी नहीं हैं। विनी अपनी मौसिरी बहन जेनी को आपनी सुरक्षितता के बारे बताती हैं। विनी अपनी बहन को पत्र में बारह घण्टे लिखती है इस बारह घण्टे से वे चिंत्रित हैं। पर विनी के इस आचरण से उन्हें आघात लगता हैं। विनी को वे व्यभिचारी मानते है,लेकिन पादर का स्नेही लारेन्स उन्हे समझाने का कोशिश करता हैं।

संपूर्ण कथा बारह घण्टे में सेमेण्ट्री,रेस्तराँ,तथा घर- इन तीन ही स्थानों पर घटने के कारण कथावस्तु के विकास एवं उसे गतिशिल रखने का कार्य वार्तालाप जनित घटना से ही हुआ हैं। पहाडी वातावरण ने कथा में रोचकता निर्माण करने

12703
A

की भूमिका संभाल ली हैं। लेखक ने समाज कीरूढ़िग्रस्तता एवं संकीर्णता का पर्दाफाश कर नया दृष्टिकोण समाज के सामने प्रस्तुत किया हैं।

अप्सरा का शाप --

इस उपन्यास की गाथा पौराणिक है, परन्तु लेखक ने पातिव्रत धर्म के आदर्श को अपने युग की भावना तथा दृष्टि से देखने का प्रयास किया हैं। लेखक ने धर्म तथा व्यवस्था के नाम पर नारी सेनिर्दय शोषण के प्रति ग्लानि व्यक्त की हैं तथा नारी की आत्मनिर्भरता का समर्थन किया है।

कथा का आरम्भ शकुन्तला की जन्म कथा की पृष्ठभूमि से हुआ हैं। महर्षि विश्वामित्र ` ब्रह्मर्षि ` पद की प्राप्ति के लिए तपस्या करते हैं। उनकी तपस्या की लगन ब्राह्मणों एवं देवताओं को ` राजर्षि `पद देने को बाध्य करती हैं। पर विश्वामित्र के क्षत्रिय होने का पता चलने पर वे उसे उपर्युक्त पद देना अस्वीकार करते हैं। विश्वामित्र फिर भी हिम्मत नहीं हारते वे प्रतिसृष्टि की रचना में सक्रिय रहते हैं। विश्वामित्र अपने इष्ट कार्य में फल प्राप्त करते है यह बात इंद्र को बेचैन करती हैं। इंद्र विश्वामित्र की तपस्या भंग करने का काम मेनका पर छोड़ देता है। मेनका मर्त्यलोक में आकर अपना कार्य करती हैं। उसके हाथ में यश आता है, लेकिन इसका परिणाम बहुत बड़ा होता है। विश्वामित्र अपनी ध्यान-साधना छोड़कर मेनका पर आसक्त होते हैं। इस संबंध से मेनका गर्भ धारण करती हैं। एक शिशु कन्या को जन्म देती हैं। अपनी दासी भानुमती पर अपने संतान की जिम्मेदारी छोड़कर मेनका अन्र्धान होती हैं। विश्वामित्र को शिशु की चिन्ता असह्य बनाती हैं। अत: कण्व ऋषी पर भरोसा कर उन्होंने शिशु को आश्रम से मालिनी तट की ओर जानेवाली मार्ग पर एक वृक्ष के नीचे रख दिया। ऋषि कण्व शकुन्तों से घिरी शिशु कन्या को देख आश्रम में उठा लाते हैं। उसे शकुन्तों द्वारा प्राप्त होने के कारण ` शकुंतला ` पुकारने लगे। कण्व ऋषि और माता गौतमी उनकी देखभाल कर सयानी बनाते हैं।

एक दिन हस्तिनापुर नरेश विर ` दुष्यन्त ` शिकार खेलते खेलते कण्व के आश्रम में आते हैं। यही उसका परिचय शकुंतला से होता हैं। शकुंतला रूपसौंदर्यपर

वह मोहित होता है,और उससे विवाह का प्रस्ताव सामने रखता है । इसी समय तात कण्व और माता गौतमी आश्रम में न होने के कारण वह इस प्रस्ताव को अस्विकृती देती हैं । माता गौतमी आनेपर अनुमति देती है और उनका गंधर्व विवाह होता हैं । दुष्यंत शकुंतला को आश्वासन देता है कि उसका पुत्र ही आर्यावर्त के सिंहासन का उत्तराधिकारी होगा । शकुंतला को अपनी अंगुठी देता हैं । कुछ दिन दोनों आश्रम में रहते है । एक दिन राजा शकुंतला से राजधानी जाने की बात कहताहैं । तब शकुंतला साथ जाना चाहती है लेकिन राजा नहीं ले जाता उसे कहता है -- एक मास पश्चात स्वयं तपोवन आकर परिणीता,के राजधानी गमन की व्यवस्था करेगा । राजा आश्रमवासियों से विदा लेते हैं ।

जब कण्व ऋषि आश्रम में आते तब उन्हें पता चलता है कि शकुंतला और दुष्यंत का विवाह हो गया हैं वे उन्हें शुभाशीर्वाद देते हैं । चार मास बीतने पर भी दुष्यंत राजा से कोई समाचार नहीं आता । कण्व ऋषि के आश्रम में दुर्वासा ऋषि आते हैं, शकुंतला गर्भ के लज्जा के कारण ऋषि का स्वागत करने के लिए भी नहीं आति दुर्वासा ऋषि शकुंतला की मनस्थिती को पहचानकर कण्व ऋषि सलाह देते हैं कि आप शकुंतला को पतिगृह में भेज दीजिए । पतिगृह में भेजने से दुष्यंत उसे पहचानता नहीं । शकुंतला राजा ने भैंट के रूप में दि अंगुठी भी खो बैठी हैं । राजा की प्रताहना से वह बहुत दु:खी होती हैं । शकुंतला वापस जाना नहीं मानती । वह भटकती रहती हैं । प्रसुती के दिनों में बहुत कष्ट उठाने पढते है, लेकिन वह अपने भाग्य को कोसती हैं । वह जीना केवल अपने पुत्र के लिए चाहती हैं । इधर दुष्यंत की रानी लाक्षणा प्रसुत हो विकृत निष्प्रान को जन्म देती हैं । राजा इस घटना को तपोवन-बाला हृदयका श्राप मान बेचैन होता हैं । इन्हीं दिनों राजा दुष्यन्त ने शकुंतला को भैंट के रूप में दि गयी अंगुठी मछूरों के द्वारा मिलती हैं । राजा का प्रेम तडपता है । राजा बेचैन होता हैं । इसी कारण उनका स्वास्थ चिन्ताजनक बनता है । पर उपचार के उपरान्त अच्छा होता हैं । इंद्र की सहायता केलिए असुर-शमन अभियान पर देवलोक जाता हैं । अभियान से लौटते समय मार्ग में कुश्यप का आश्रम जानकर दर्शन के लिए दुष्यन्त प्रवेश करते हैं,यहीं

उसकी भेंट शकुंतला एवं उसका पुत्र से होती है। शकुंतला दुष्यंत के साथ हस्तिनापुर जाने के लिए तैयार होती है। सानुमती मेनका को यह संदेश देती है। यह संदेश सुनकर मेनका मर्त्यलोक में आती है। अपनी पुत्री शकुंतला को छली दुष्यन्त के साथ जाने के लिए वह मना करती है। फिर भी माता का आदेश ठुकराकर वह पति के साथ धर्म की रक्षा के लिए जाने का दृढ निश्चय करती है। मेनका उसे ' एवमस्तु ' का श्राप देकर देवलोक लौटती है।

क्यों फँसे ?

पारम्परिक यौन सम्बन्धो की मान्यताओंसे नर-नारी की मुक्ति के उद्देश्य से लिखा यह उपन्यास यौन स्वेच्छाचार मानव को निचे स्तर पर कैसे लाती है। इसका विस्तृत विवेचन किया है।

लुधियाना के होंजरी व्यापार से समृध्द सनाढय परिवार का भास्कर एम.ए.अर्थशास्त्र लेकर हो गया है। उन्हे पत्रकारिता का शौक है। उन्होंने डिप्लोमा भी किया है। एक सरकारी नौकरी के इंटरव्यू के लिए सिमला जाता है। भास्कर के मामा मामी सिमला में रहते है। भास्कर मामा के यहाँ ठहरता है। मामा के घर रहने के कारण मामी और उनका शारीरिक सम्बन्ध शुरु होता है। यह प्रकार भास्कर को अच्छा नहीं लगता। वह सिमला छोडकर दिल्ली जाता है जहाँ उसे केन्द्रीय सरकार के प्रकाशन विभाग में अस्थायी नौकरी मिल जाती है।

दिल्ली में दो साल नौकरी करने का यह नतिजा होता है कि उनकी मुलाकात बदरून्निस्सा से होती है। बदरून्निस्सा हारू की ओर आकर्षित देखकर उसका पिछा छोड देता है। दिल्ली में भास्कर एक रिटायर्ड कर्नल के घर में खर्चे पर अतिथि के रूप में रहता है। वहाँ उनकी भेंट डॉ.मिस से होती है। वह उत्तर प्रदेश के लोक स्वास्थ विभाग में नौकरी करती है,नौकरी में बढोती की आशा से कोर्स करने दिल्ली आयी है। उनका सम्पर्क इतना बढता है कि एक दिन रात में दोनों एक कमरे में मिलते हैं, लेकिन मिस भास्कर को शादी का वादा करती है, भास्कर शादी के झंझट में पडनेवाला नहीं है। वह शादी नहीं करना चाहता, इसी कारण वह मिस से संबंध तोड देता है।

भास्कर अपने मित्र अरूण मिश्रा के इच्छानुसार एक आर्ट-प्रदर्शनी की समीक्षा पत्र में छापने के लिए प्रदर्शनी देखने जाता है। चित्रकार मोती नाम महिलासे वहाँ मुलाकात होती है। उसे खुश करने के लिए भास्कर पत्र में उसकी खुशामत करता है। वह अपने चित्रों की विक्री का श्रेय भास्कर को देती है। ऐसे स्थिति में भास्कर की इच्छा को वह नहीं ठुकराती। विवाहित होकर भी वह भास्कर को छूप-छूप कर मिलाने आती है। इतनाही नही तो उनका अलिंगन-चुंबन तक का ही प्यार होता है ।

कई दिन बित जानेपर भास्कर और मोती की दूबारा मुलाकात मसूरी होती है। सुबह मिलने का वादा करके वह जाती है। इसी रात में `हेना` नामक अज्ञात युवती उसके सम्पर्क में आती है। रात में नृत्य होता है,ज्यादह रात होने के कारण वह घर नहीं जाती भास्कर के साथ रहती है। वह अपना सर्वस्व समर्पण करती है। भास्कर जिसकी अपेक्षा करता था, वह मिल जानेसे वह संतुष्ट था,उसकी प्यास बुझ गयी थी इसी कारण वह सुबह तक सो गया था। सुबह मोती मिलने आती है,तभी भास्कर हेना के साथ सोया देखकर बहुत क्रुध्द होती है। वह हेना कोगालियाँ देती है। हेना मोती को भास्कर को पत्नी मानकर तुरंत भागती है। मोती हेना के `रण्डी` कहती है। यह बात भास्कर को नहीं रूचती। हेना का प्यार निरपेक्षा था। हेना के प्यार में तृप्ति देखने को मिलती है। हेना के प्यार से वह बहुत पुलकित हो गया है।

इस उपन्यास में पुर्नमिलन की घटना ने कथा को हिन्दी सिनेमा का रूप दिया है। आधुनिक युग में स्त्री अपना सर्वस्व कैसे खो बैठती है ,इसका चित्रण किया विवाहित होकर भी अपनी सीमा तोड देती है।

मेरी तेरी उसकी बात —

`मेरी तेरी उसकी बात` उपन्यास की कथावस्तु सन १९१४ से १९४५ इस काल में घटित घटनाओंका इतिहास है। जैसे १९१४ का प्रथम विश्वयुध्द ,स्वदेशी

सत्याग्रह ,रोलेट अधिनियम,खिलाफत आन्दोलन,असहयोग आन्दोलन,दिल्ली असेम्बली बम-विस्फोट,महात्मा गांधी का सन १९३३ का अनशन,१९३६ का कॅाग्रेस का लाखनऊ अधिवेशन,१९३६ का त्रिपुरी अधिवेशन,द्वितिय महायुध्द,क्रिप्स योजना, १९४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन , आझाद हिन्द फौज की स्थापना,१९४५ के आम चुनाव, आदि । ` मेरी तेरी उसकी बात` उपन्यास का काल ४० साल का हैं। इस काल की लम्बी परिधि में लेखक ने किसी तीन पीढियों को चित्रित किया है , जो विगत,आगत तथा अनागत के त्रिकाल की अटूट सामाजिक शृंखला का निर्माण करने में सफल हुई हैं ।

कथा आरंभ पिछली पीढी से होता हैं। रतनलाल सेठ इस पीढी के प्रतिनिधि हैं। उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्ध तथा बीसवी सदी का पूर्वाध संयुक्त परिवार का काल हैं। सेठजी का परिवार अविभक्त हैं। बडे भाई चल बसने के उपरान्त घर गृह चलाने की जिम्मेदारी रतनलाल सेठ पर आती हैं। अपने भाई के दो सन्तान हरलाल और किशनलाल थे। इन्हें अपने सन्तान मानकर पाल-पोसकर बड़े प्यार से बड़े करते हैं। सेठ की उम्र जब ३२ की थी तब उनकी पहली पत्नी का देहावसन होता हैं। घरमें जवान बेटे,पोते,पोती रहने तक उन्हें दूसरी शादी करना अच्छा नहीं लगता । ग्यारह वर्षों के बाद उन्हें अकेलापन सताने लगता हैं। संगीत-संगति में ईशा से सम्पर्क बढता हैं। ईशा से एक कन्या भी होती है । ईशा को अपनी बेटी की चिंता बहुत सताती हैं, ईशा इसके बदले सेठ से एक घर बनाकर लेती है। यह हरकते भतीजों को अच्छी नहीं लगती । सेठजी अपनी पैतृक संपत्ती का बटवारा कर देते हैं। लोगों ने बार बार सताने पर सेठजी दूसरी शादी अमरो से करते हैं। यह समय प्रथम विश्वयुध्द का समय था । लगातार नर-संहार होता रहा । परिणाम स्वरूप यूरोप से पैदा ` एन्फ्लुएंजा` सारे विश्व सारे विश्व को संत्रस्त किया था । भारत में भी प्लेगकी की महामारी अनेक को मृत्यु का शिकार बनना पड़ा । ` अमरो ` एक बेटेको जन्म देकर इसी इस महामारी की शिकार बनती हैं। रतनलाल की बहन गंगा अमरो के लड़के अमर ` को बड़े प्यारसे पाल-पोसकर बड़ा करती हैं।

अमर चौदह वर्ष का हुआ नवी कक्षा में पढता था । उसी समय उसके मन में देश के प्रति रुचि बढती है । अपने अध्यापक मथुराबाबू, हरिमैया जैसे लोगों की बहस सुनकर उसके मन में विदेशीयों के प्रति घृणा निर्माण होती है । अमर डॉक्टरी करते समय भी समाजवादी कॉंग्रेसी बनता है । आ.नरेन्द्रदेव, डॉ.लोहिया उसके आदर्श बनते हैं । उन्हीं दिनों उसकी मुलाकात उषा से होती है । एक साईकल दुर्घटना में उसे अस्पताल लाया गया है । आश्चर्य की बात यह है कि अमर के पुराने अध्यापक धर्मानंद पंडित की वह बेटी है । पंडित जी अपने पूराने छात्र द्वारा की गयी सुश्रुषा से बहुत आनंदित होते हैं । अमर को वे घर पर आने का न्योता देते हैं । उन दोनों का सम्पर्क इतना बढता है कि वे दोनों शादी करना चाहते हैं । अमर अपनी प्रॅक्टिस भी करता है और राजनीति में भी सक्रिय रहता है । दूसरे महायुध्द में सरकारकी नीति के विरोध के अपराध में उसे गिरफ्तार किया जाता है । अमर जब जेल में होते है, तब घरकी निगरानी नरेन्द्र कोहली करते हैं । अमर जेल में था तब नरेन्द्र घर की निगरानी के लिए तब उषा उसके प्रति आकर्षित होती है । बहुत समझाने बुझाने पर भी वह मानती नहीं आखिर वह नरेन्द्र के साथ भाग जाती है । इसी बीच एक दुर्घटना में अमर की मृत्यु होती है । बेटे प्रताप को नाना-नानी के यहाँ रख वह आत्म-निर्भरता के लिए पी.एच.डी. करती है । १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन में छात्रों की नेता बन अंग्रेजी की नींद खराब कर देती है । अपने एक सहयोगी रूद्रदात पाठक के साथ भूमिगत रह आन्दोलन जारी रखती है। पुलिस का पिछा छोडने के लिए बम्बई आकर छदमनाम ग्रहण करती है ।

पति-वियोग और बच्चे का भविष्य उसके चिन्ता के विषय बन जाते हैं । वह रूद्रदत्त, पाठक के प्रति आकर्षण महसूस करती है । उनका सम्बन्ध इतना बढता है, कि उषा गर्भवती बनती है । शारीरिक दुर्बलता के कारण गर्भपात होता है । सन १९४५ में देश में चुनाव होते हैं । कॉंग्रेस मंत्रीमण्डल के गठन से सभी वॉरन्ट खत्म हो जाते हैं । उषा अपने बेटे से मिलने तथा रूद्रदत्त से विवाह करने को उत्सुक है । वह लखनऊ वापस आती है और सिविल मैरेज की नोटिस देती है । एक झगडे में

बतसिया प्रताप को अपनी माँ के बारे में बुरा सुनाता है। उषा को यह पता चलता है। उषा अपने बच्चे के सन्तोष के लिए अपना निर्णय बदलती है। उसे रिझा लगता है, कि मेरे सुख के लिए बेटे का चैन नहीं छिनुँगी। बलो होगो तो मेरी।

कथा के विशाल पटल का लाभ उठाकर लेखक ने तीन पीढियों की कथा का निर्माण किया है। सेठ रतनलाल, धर्मानंद पंडित तथा कोहली। राजनैतिक, संघर्ष, प्रेम, स्वतंत्रता आंदोलन, भूमिगत होने की घटनाएँ, अँग्रेजी दमन के खिलाफ भाषण एवं निदर्शन जैसी घटनाओंने कथा में रोचकता लायी है। कथा के विशाल पटल के जरिए समाज वर्ग रिश्वतखोरी, शोषण-नीति, बेरोजगारी, महँगाई जैसी समस्याओं को हल किया है। कही कहीं तिखा व्यंग्य भी किया है। स्वाधीनता-संग्राम के चित्रण में स्वाभाविक निखार अपनी चरम सीमा पर पहुँचना है।

निष्कर्ष

संक्षेप में यशपाल के संपूर्ण उपन्यास जगत को कथाओंकी सम्यक समीक्षा की जाये तो निम्नलिखित विशेषताएँ हमारे सामने आती हैं।

१) कथावस्तु के लगभग सभी प्रारंभ और अंत नाटकीय और पाठकों को जिज्ञासा को आगे बढानेवाली हैं।

२) अधिकांश उपन्यासों को कथावस्तु राजनितिक परिवेश की पृष्ठभूमि परही विकसित हुई सी दिखाई देती है।

३) सभी उपन्यासों में यशपालने अपना प्रिय सिध्दान्त मार्क्सवाद तथा सामाजिक सिध्दान्तों का प्रचार और प्रतिष्ठापना करना ही कथावस्तु का प्रधान उद्देश्य माना है।

४) बहुतांश कथानकों में ' स्त्री ' पात्रों को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देकर, स्त्रियोंकी आत्मनिर्भरता, स्वयंपूर्णता, मुक्त यौवन स्वातंत्र्य तथा विवाह और प्रेम के बारे में प्रगतिशिल दृष्टिकोन आदि काही चित्रण लेखक का प्रिय विषय रहा है। कहीं कहींपर वासनाभरे चित्र भी सामने आते हैं।

जो यशपाल की प्रगतिशील विचारधाराओं को अतिरंजित बनाते हैं।

५) यशपाल ने वर्णव्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है।

६) कथावस्तु की शैली वर्णनात्मक ही है।

७) कथावस्तु में हास्य, व्यंग्य-विनोद के प्रसंग बहुत कम हैं।

८) सभी कथाओं में हम एक स्त्री के साथ कई पुरूषों के शारीर-संबंध का चित्रित किए हुए दिखाई देते हैं। यशपाल को शायद ऐसे बहुपुरूषी संबंधों में विशेष रूचि होगी।

९) कथावस्तु में सभी जगह राजनीति, समाज, इतिहास का अत्यंत व्यंगता से किया गया चित्रण अत्यंत सुंदर लगता है।

१०) प्राय: सभी उपन्यासों में मध्यमवर्गीय पात्रों की कथाओं को ही चुना गया है।